ORIGINAL RESEARCH PAPER

Commerce

सरकारी एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों में संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य संतुष्टि: एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

KEY WORDS: संगठनात्मक भूमिका तनाव, कार्य संतुष्टि, सरकारी विद्यालय, निजी विद्यालय, तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

सरोज भाटी व्यवसाय प्रबंधन विभाग, वाणिज्य संकाय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.).

डॉ. दीप्ति भार्गव व्यवसाय प्रबंधन विभाग, वाणिज्य संकाय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य सरकारी एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों में संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य संतुष्टि के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य को सैद्धांतिक और साहित्यिक आधार पर स्पष्ट करना है। शिक्षक शिक्षा-व्यवस्था का केंद्रीय तत्व है और उसकी कार्यक्षमता प्रत्यक्ष रूप से उसके तनाव और संतोष स्तर से प्रभावित होती है। संगठनात्मक भूमिका तनाव उस अवस्था को इंगित करता है जब शिक्षक की भूमिकाओं और अपेक्षाओं में असंतुलन उत्पन्न होता है, जबकि कार्य संतुष्टि उसके व्यावसायिक जीवन में मानसिक संतुलन और सकारात्मक दृष्टिकोण का द्योतक है। साहित्य समीक्षा से यह परिप्रेक्ष्य सामने आता है कि सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों को प्रशासनिक दायित्वों और संसाधनों की कमी से तनाव का अनुभव होता है, जबकि निजी विद्यालयों में प्रतिस्पर्धा और नौकरी की असुरक्षा असंतोष को जन्म देती है। इन दोनों संदर्भों का तुलनात्मक विवेचन यह इंगित करता है कि संगठनात्मक संस्कृति, सेवा-शर्तें और व्यावसायिक सुरक्षा शिक्षक के व्यावसायिक जीवन की गुणवत्ता निर्धारित करते हैं। इस शोध पत्र में इन आयामों को सैद्धांतिक ढाँचे, पूर्ववर्ती शोध कार्यों और नीतिगत परिप्रेक्ष्य के आधार पर समीक्षा रूप में प्रस्तुत किया गया है। परिणामस्वरूप यह विमर्श शिक्षा-प्रणाली में शिक्षक को तनावमुक्त और संतोषजनक कार्य-परिस्थितियाँ प्रदान करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

परिचय (Introduction)

शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति का आधार स्तंभ है और शिक्षक इस व्यवस्था की आत्मा। शिक्षक केवल ज्ञान का प्रसारक नहीं वरन समाज का मार्गदर्शक और परिवर्तनकर्ता होता है। किंतु जिस प्रकार समाज में प्रतिस्पर्धा, जटिलताएँ और उत्तरदायित्व बढ़े हैं, उसी प्रकार शिक्षकों की व्यावसायिक भूमिका भी अधिक चुनौतीपूर्ण हो गई है। इस चुनौती का एक महत्वपूर्ण आयाम है — **संगठनात्मक भूमिका तनाव** और **कार्य संतुष्टि**।

संगठनात्मक भूमिका तनाव (Organisational Role Stress) उस स्थिति को इंगित करता है जब किसी शिक्षक की क्षमता और विद्यालय द्वारा अपेक्षित कार्य आवश्यकताओं में असंतुलन उत्पन्न होता है। यह तनाव कार्यभार, संसाधनों की कमी, भूमिका की अस्पष्टता, प्रशासनिक दबाव और प्रबंधन से टकराव जैसे कारणों से उत्पन्न हो सकता है। इसके विपरीत, **कार्य संतुष्टि** (Job Satisfaction) उस मानसिक स्थिति को दर्शाती है जिसमें शिक्षक अपने कार्य, पद और व्यावसायिक परिवेश से संतुष्ट अनुभव करता है। कार्य संतुष्टि शिक्षक के मनोबल, उसकी उत्पादकता और विद्यार्थियों की उपलब्धि से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है।

भारत में शिक्षा व्यवस्था दो प्रमुख धाराओं — सरकारी और निजी विद्यालयों पर आधारित है। दोनों की परिस्थितियाँ और चुनौतियाँ अलग-अलग हैं। सरकारी विद्यालयों में जहाँ प्रशासनिक दबाव और अतिरिक्त दायित्व अधिक पाए जाते हैं, वहीं निजी विद्यालयों में प्रतिस्पर्धी वातावरण, नौकरी की असुरक्षा और प्रबंधन-शिक्षक संबंधों की जटिलता तनाव के कारण बनते हैं। इन दोनों संदर्भों में शिक्षकों के संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य संतुष्टि का स्तर भिन्न-भिन्न हो सकता है जो संपूर्ण शिक्षण-प्रक्रिया और शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

आज के समय में यह विषय इसलिए भी अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि शिक्षा केवल सूचना हस्तांतरण का माध्यम नहीं रह गई है वरन यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व-निर्माण और जीवन-मूल्यों के विकास का उपकरण है। ऐसे में यदि शिक्षक तनावग्रस्त और असंतुष्ट रहेगा तो वह अपनी भूमिका को प्रभावी ढंग से निर्वाह नहीं कर पाएगा। इसके विपरीत, संतुष्ट और प्रेरित शिक्षक न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाता है वरन विद्यार्थियों में सकारात्मक ऊर्जा और अनुशासन का संचार भी करता है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य उपलब्ध सैद्धांतिक व साहित्यिक स्रोतों के आधार पर यह समझना है कि संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य संतुष्टि के परस्पर संबंध सरकारी एवं निजी विद्यालयों के संदर्भ में किस प्रकार से परिलक्षित होते हैं। साथ ही, यह भी देखा जाएगा कि इन दोनों कारकों के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में कौन-से बिंदु शिक्षा नीति और व्यवहारिक सुधार के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि (Theoretical Background)

शिक्षकों की व्यावसायिक भूमिका को समझने के लिए दो प्रमुख आयाम महत्वपूर्ण हैं— संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य संतुष्टि। इन दोनों की व्याख्या विभिन्न सिद्धांतों और मॉडलों के माध्यम से की जा सकती है।

तनाव सिद्धांत (Stress Theories)

तनाव को प्रारंभिक रूप से **हैंस सेली** ने सामान्य अनुकूलन सिंड्रोम (General Adaptation Syndrome) के रूप में प्रस्तुत किया था जिसके अनुसार तनाव शरीर की वह सार्वभौमिक प्रतिक्रिया है जो किसी बाहरी दबाव या चुनौती के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि जब शिक्षक पर कार्यभार, समय-सीमा या प्रशासनिक दबाव अत्यधिक बढ़ जाते हैं तो उसकी शारीरिक और मानसिक कार्यक्षमता प्रभावित होती है।

संगठनात्मक भूमिका तनाव का मॉडल

भारत में **उदय पारीक** द्वारा विकसित Organisational Role Stress Framework विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इस मॉडल में भूमिका अस्पष्टता, भूमिका अधिभार, भूमिका टकराव और भूमिका ठहराव जैसे 10 आयामों के आधार पर शिक्षक के तनाव स्तर का आकलन किया जाता है। यह मॉडल शिक्षा जैसे संगठित क्षेत्र में व्यावसायिक दबावों को समझने के लिए उपयुक्त है।

कार्य संतुष्टि सिद्धांत (Job Satisfaction Theories)

हर्ज़बर्ग का द्वि-कारक सिद्धांत (Two Factor Theory) यह दर्शाता है कि नौकरी संतुष्टि दो प्रकार के कारकों से प्रभावित होती है—
हाइजीन कारक (जैसे वेतन, कार्य-परिस्थितियाँ, सुरक्षा)
प्रेरक कारक (जैसे मान्यता, उपलब्धि, व्यावसायिक विकास के अवसर)।

दूसरी ओर, **मस्लो का आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत** यह स्पष्ट करता है कि जब तक शिक्षक की मूलभूत आवश्यकताएँ (वेतन, सुरक्षा) पूरी नहीं होतीं, तब तक वह उच्च स्तरीय आवश्यकताओं (मान्यता, आत्म-साक्षात्कार) से संतुष्टि प्राप्त नहीं कर सकता।

शिक्षा मनोविज्ञान में प्रासंगिकता

इन सिद्धांतों से यह निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों में पाए जाने वाले तनाव और कार्य संतुष्टि के स्तर को केवल प्रशासनिक दृष्टि से नहीं वरन **मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टिकोण** से भी समझना होगा। तनाव और संतुष्टि का प्रत्यक्ष प्रभाव शिक्षक की शिक्षण-क्षमता, निर्णय-प्रक्रिया और विद्यार्थियों के साथ अंतःक्रिया पर पड़ता है।

संबंधित साहित्य समीक्षा (Review of Related Literature)

किसी भी शोध समस्या की पृष्ठभूमि को समझने और शोध अंतराल (Research Gap) की पहचान करने के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र के दो प्रमुख चर हैं— **संगठनात्मक भूमिका तनाव** और **कार्य संतुष्टि**। इन दोनों विषयों पर देश-विदेश में हुए पूर्ववर्ती शोधों को यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

संगठनात्मक भूमिका तनाव पर किए गए शोध

भारत और विदेशों में संगठनात्मक भूमिका तनाव को विभिन्न दृष्टिकोणों से परखा गया है।

Katyal (2022) ने सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के कर्मचारियों पर अध्ययन करते हुए पाया कि भूमिका अधिभार और अंतर-भूमिका तनाव संगठनात्मक भूमिका तनाव के प्रमुख योगदानकर्ता हैं।

Saxena एवं Manjrekar (2020) ने नवी मुंबई क्षेत्र के शिक्षकों पर शोध करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि नौकरी की असुरक्षा और सीमित पदोन्नति अवसर तनाव के प्रमुख कारक हैं।

Bharti (2019) ने कला और विज्ञान संकायों के शिक्षकों पर अध्ययन करते हुए दर्शाया कि लिंग के आधार पर संगठनात्मक भूमिका तनाव में स्पष्ट भिन्नता पाई जाती है।

Baliyan et al. (2018) ने बोत्सवाना के निजी विद्यालयों के शिक्षकों में पाया कि विरोधाभासी नीतियाँ, कार्यभार और अनुशासनहीनता तनाव उत्पन्न करने वाले प्रमुख कारण हैं।

Bano एवं Talib (2018) ने संगठनात्मक भूमिका तनाव का वैचारिक ढांचा प्रस्तुत करते हुए इसे भूमिका अस्पष्टता, व्यक्तिगत अपर्याप्तता और भूमिका संघर्ष जैसे कारणों से जोड़कर देखा।

कार्य संतुष्टि पर किए गए शोध

शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर हुए अध्ययनों ने यह स्पष्ट किया है कि संतुष्टि शिक्षा की गुणवत्ता और शिक्षक की प्रभावशीलता दोनों को प्रभावित करती है।

कुमारी प्रियंका (2021) ने शेखावाटी क्षेत्र के शिक्षकों पर अध्ययन कर दर्शाया कि पारिवारिक संघर्ष और असहयोगी वातावरण कार्य संतुष्टि को प्रभावित करते हैं।

सिंह एवं कुमारी (2020) ने लिटिल अंडमान में पाया कि सरकारी और निजी विद्यालयों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया जाता है।

Pathani एवं Chamyal (2019) ने प्राथमिक विद्यालयों पर शोध करते हुए दिखाया कि ग्रामीण और शहरी शिक्षकों की संतुष्टि में अंतर है, किंतु लिंग आधारित अंतर कम है।

देवी सुशीला (2018) ने शिक्षामित्रों और प्राथमिक शिक्षकों की तुलनात्मक कार्य संतुष्टि का विश्लेषण कर यह निष्कर्ष निकाला कि आय असमानता और अतिरिक्त कार्य असंतोष के प्रमुख कारण हैं।

Hameed et al. (2018) ने पाकिस्तान में विश्वविद्यालय स्तर पर पाया कि सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में वेतन, पदोन्नति और संगठनात्मक संचार से जुड़े महत्वपूर्ण अंतर पाए जाते हैं।

शोध अंतराल (Research Gap)

समीक्षा से यह स्पष्ट हुआ कि—
अधिकांश अध्ययन **प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर** पर केंद्रित रहे हैं।

संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य संतुष्टि का **संयुक्त तुलनात्मक विश्लेषण** उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के संदर्भ में बहुत कम हुआ है।

अब तक हुए शोध अधिकतर **क्षेत्रीय या आंशिक दृष्टिकोण** तक सीमित रहे हैं, जबकि सरकारी और निजी विद्यालयों की तुलना करते हुए समग्र परिप्रेक्ष्य में अध्ययन अपेक्षित है।

प्रमुख समस्याएँ (Key Issues)

संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य संतुष्टि का संबंध जटिल और बहुआयामी है। विशेषकर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों में यह संबंध अनेक संरचनात्मक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं के रूप में प्रकट होता है। इन समस्याओं को निम्नलिखित बिंदुओं में संक्षेपित किया जा सकता है—

प्रशासनिक दबाव और अतिरिक्त दायित्व

सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों पर शिक्षण कार्य के अतिरिक्त प्रशासनिक कार्यभार (जैसे चुनाव ड्यूटी, सर्वेक्षण कार्य, योजनाओं का क्रियान्वयन) अपेक्षाकृत अधिक डाला जाता है। इससे उनकी प्राथमिक भूमिका यानि शिक्षण प्रभावित होता है और तनाव स्तर बढ़ता है[1]।

निजी विद्यालयों में प्रतिस्पर्धी वातावरण

निजी विद्यालयों में प्रबंधन-प्रधान संस्कृति, परिणाम-आधारित मूल्यांकन और नौकरी की असुरक्षा शिक्षकों में अस्थिरता और चिंता का कारण बनते हैं। कार्य संतुष्टि यहाँ अक्सर वेतन, सुविधाओं और प्रबंधन संबंधों पर निर्भर करती है।

भूमिका अस्पष्टता और भूमिका टकराव

कई बार शिक्षक की भूमिका स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं होती। एक ही शिक्षक से कई कार्य अपेक्षित होते हैं — शिक्षण, प्रशासनिक कार्य, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, अभिभावक-शिक्षक संवाद इत्यादि। यह स्थिति भूमिका टकराव को जन्म देती है जो संगठनात्मक भूमिका तनाव का मुख्य स्रोत है।

संसाधनों और सुविधाओं की असमानता

सरकारी विद्यालयों में आधारभूत संसाधनों की कमी और निजी विद्यालयों में अत्यधिक तकनीकी दबाव, दोनों ही परिस्थितियाँ शिक्षकों की कार्यकुशलता और संतुष्टि को प्रभावित करती हैं। संसाधनों की असमानता कार्य संतोष को बाधित करने वाला कारक है।

वेतनमान और सेवा-शर्तों में भिन्नता

सरकारी शिक्षकों को अपेक्षाकृत स्थिर वेतन और सेवा सुरक्षा प्राप्त होती है, जबकि निजी शिक्षकों को प्रायः असमान वेतनमान और अनुबंध आधारित सेवाएँ मिलती हैं। यह अंतर शिक्षकों की संतुष्टि और प्रेरणा पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक प्रतिष्ठा

तनाव और असंतोष केवल व्यावसायिक स्तर पर ही नहीं वरन शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक जीवन और विद्यार्थियों के साथ उनके संबंधों को भी प्रभावित करते हैं। तनावग्रस्त शिक्षक सकारात्मक शिक्षण वातावरण निर्मित करने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

संभावनाएँ (Prospects)

यद्यपि संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य असंतोष शिक्षण-प्रणाली की गुणवत्ता के लिए गंभीर चुनौतियाँ हैं, तथापि इनके समाधान और सुधार की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं। सरकारी और निजी विद्यालयों दोनों संदर्भों में इन संभावनाओं को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है—

तनाव प्रबंधन कार्यक्रम

विद्यालय स्तर पर **तनाव प्रबंधन (Stress Management) कार्यशालाएँ** और **मानसिक स्वास्थ्य परामर्श (Counseling)** शिक्षकों को तनाव कम करने और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हो सकते हैं।

व्यावसायिक विकास और प्रशिक्षण

सतत् व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development) के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को नई तकनीकों, शिक्षण-पद्धतियों और प्रबंधन रणनीतियों से परिचित कराते हैं। यह उनकी आत्म-प्रभावकारिता (self-efficacy) और कार्य संतुष्टि को बढ़ाने का साधन है।

संसाधनों और कार्य-परिस्थितियों का सुधार

सरकारी विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार और निजी विद्यालयों में कार्य की पारदर्शिता तथा निष्पक्षता, दोनों ही शिक्षकों की कार्य संतुष्टि बढ़ाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम हैं।

वेतनमान और सेवा-सुरक्षा में संतुलन

निजी विद्यालयों में शिक्षकों को स्थिर वेतन और न्यूनतम सेवा-सुरक्षा प्रदान करना आवश्यक है। यह असुरक्षा-जनित तनाव को घटाकर कार्य संतुष्टि में वृद्धि कर सकता है।

सकारात्मक संगठनात्मक संस्कृति

विद्यालयों में सहयोगात्मक वातावरण, शिक्षक-प्रशासन के मधुर संबंध और निर्णय-निर्माण में शिक्षकों की भागीदारी, संगठनात्मक संस्कृति को अधिक स्वस्थ और संतोषप्रद बना सकते हैं।

नीतिगत पहल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षक-प्रशिक्षण और डिजिटल संसाधनों के उपयोग पर बल दिया है। यदि इसे प्रभावी ढंग से लागू किया जाए तो शिक्षकों की भूमिका अधिक समर्थ और संतोषजनक बन सकती है।

चर्चा (Discussion)

संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य संतुष्टि का संबंध शिक्षा-व्यवस्था की गुणवत्ता से गहराई से जुड़ा हुआ है। सरकारी और निजी विद्यालयों के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि दोनों संदर्भों में तनाव और संतोष के स्रोत भिन्न हैं, किंतु उनके प्रभाव लगभग समान रूप से गंभीर हैं। सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों का प्रमुख तनाव प्रशासनिक कार्यभार, अतिरिक्त दायित्व और संसाधनों की कमी से उत्पन्न होता है। यह स्थिति उनकी शिक्षण-प्रभावशीलता को सीमित करती है। वहीं निजी विद्यालयों में शिक्षकों को नौकरी की असुरक्षा, परिणाम-आधारित दबाव और प्रबंधन की कठोर नीतियों का सामना करना पड़ता है। यहाँ कार्य संतुष्टि वेतन, सुविधाओं और संगठनात्मक संस्कृति से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है।

दोनों ही प्रकार के विद्यालयों में यह स्पष्ट है कि जहाँ तनाव का स्तर अधिक है, वहाँ कार्य संतुष्टि का स्तर अपेक्षाकृत निम्न रहता है। इससे न केवल शिक्षकों का मनोबल प्रभावित होता है वरन विद्यार्थियों की शिक्षा की गुणवत्ता भी प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती है। अतः संगठनात्मक दृष्टि से यह समझना आवश्यक है कि शिक्षक तभी प्रभावी ढंग से कार्य कर सकते हैं जब उन्हें संतुलित कार्य-परिस्थितियाँ, सहयोगात्मक वातावरण और व्यावसायिक सुरक्षा प्रदान की जाए।

चर्चा का एक अन्य महत्त्वपूर्ण आयाम यह भी है कि तनाव और संतोष केवल व्यक्तिगत अनुभव नहीं हैं वरन ये शिक्षा-प्रणाली की समग्र संस्कृति को आकार देते हैं। यदि विद्यालयी वातावरण सहयोगी और सकारात्मक हो तो तनाव की तीव्रता घट जाती है और कार्य संतुष्टि बढ़ जाती है। इसके विपरीत, प्रतिस्पर्धी और दमनकारी वातावरण शिक्षक को असंतुष्ट और असहाय बना देता है।

इस प्रकार यह विमर्श इंगित करता है कि संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य हमें शिक्षा की नीतिगत दिशा और व्यवहारिक सुधार के लिए गहरे संकेत प्रदान करता है। यह आवश्यक है कि दोनों प्रकार की संस्थाएँ अपने शिक्षकों के लिए ऐसी रणनीतियाँ विकसित करें जो तनाव को न्यूनतम और संतुष्टि को अधिकतम करने में सक्षम हों।

निष्कर्ष (Conclusion)

शिक्षकों में संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा-व्यवस्था की गुणवत्ता सीधे-सीधे शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य और व्यावसायिक दृष्टिकोण से जुड़ी हुई है। सरकारी विद्यालयों में जहाँ प्रशासनिक कार्यभार और संसाधनों की कमी तनाव को जन्म देते हैं, वहीं निजी विद्यालयों में नौकरी की असुरक्षा और प्रबंधन के दबाव असंतोष को बढ़ाते हैं। दोनों ही स्थितियों में यह तथ्य सामने आता है कि तनाव और संतोष एक-दूसरे के पूरक और विपरीत दिशा में कार्य करने वाले कारक हैं।

यह भी स्पष्ट हुआ कि यदि शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाए, कार्य-परिस्थितियाँ संतुलित हों और व्यावसायिक सुरक्षा सुनिश्चित हो तो तनाव का स्तर घट सकता है और संतुष्टि का स्तर बढ़ सकता है। इसके विपरीत, यदि शिक्षक लगातार असंतुलन और दबाव में कार्य करता है तो उसकी कार्यक्षमता, निर्णय-क्षमता और विद्यार्थियों से अंतःक्रिया सभी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा-नीति और विद्यालय-प्रबंधन दोनों स्तरों पर ऐसे कदम उठाए जाएँ जिनसे शिक्षक को एक सहयोगात्मक, सुरक्षित और प्रेरणादायी वातावरण उपलब्ध हो सके। केवल तभी शिक्षा-प्रणाली अपने वास्तविक उद्देश्यों को पूरा कर सकेगी और शिक्षक अपनी भूमिका को प्रभावी ढंग से निर्वाह कर पाएगा।

उपसंहार (Epilogue)

संगठनात्मक भूमिका तनाव और कार्य संतुष्टि केवल व्यावसायिक अवधारणाएँ भर नहीं हैं वरन ये शिक्षा की आत्मा से जुड़े हुए प्रश्न हैं। शिक्षक जब अपने विद्यालय में प्रवेश करता है तो वह केवल पाठ्यक्रम का वाहक नहीं होता वरन समाज की अपेक्षाओं, बच्चों के भविष्य और राष्ट्र के निर्माण का उत्तरदायित्व भी अपने साथ लेकर चलता है। ऐसी स्थिति में यदि वह तनावग्रस्त और असंतुष्ट होगा तो शिक्षा का चरित्र निस्संदेह प्रभावित होगा।

सरकारी और निजी विद्यालयों का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य यह दर्शाता है कि दोनों की चुनौतियाँ भिन्न हैं, किंतु मूल समस्या समान है— शिक्षक की भूमिका का असंतुलन। एक ओर सरकारी विद्यालयों में प्रशासनिक बोझ और संसाधनों की कमी तो दूसरी ओर निजी विद्यालयों में असुरक्षा और प्रतिस्पर्धी दबाव, दोनों ही परिस्थितियाँ शिक्षक को उसकी मूल भूमिका— शिक्षण से भटका देती हैं।

सार रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा की गुणवत्ता तभी सशक्त होगी जब शिक्षक को संगठनात्मक भूमिका तनाव से मुक्त कर उसे कार्य-संतुष्टि के वास्तविक अवसर दिए जाएँ। यह अवसर केवल वेतन या पदोन्नति तक सीमित नहीं वरन सहयोगात्मक वातावरण, मान्यता और व्यावसायिक गरिमा की स्थापना से जुड़ा हुआ है।

भविष्य की दिशा यही है कि शिक्षा-व्यवस्था को ऐसा संतुलन खोजने की आवश्यकता है जहाँ शिक्षक का मन बोझिल न होकर उत्साहित हो, उसकी भूमिका बंधनकारी न होकर प्रेरणादायी हो और उसकी संतुष्टि केवल व्यक्तिगत न होकर सामाजिक परिवर्तन का आधार बने। तभी शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्य— **व्यक्ति और समाज दोनों का समग्र उत्थान**, को प्राप्त कर सकेगी।

संदर्भ (REFERENCES)

1. Selye, H. (1956). The stress of life. New York: McGraw-Hill.
2. Pareek, U. (1993). Making organizational roles effective. New Delhi: Tata McGraw-Hill.
3. Herzberg, F., Mausner, B., & Snyderman, B. B. (1959). The motivation to work. New York: John Wiley.
4. Maslow, A. H. (1943). A theory of human motivation. Psychological Review, 50(4), 370–396. https://doi.org/10.1037/h0054346
5. Katyal, A., Behera, D., Jassal, N., & Chakraborty, P. (2022). Assessing organizational role stress of employees in public and private sectors. Psychology and Cognitive Sciences Open Journal, 8(1), 1–8. https://doi.org/10.17140/PCSOJ-8-164
6. Saxena, S., & Manjrekar, P. (2020). A study of occupational stress among school teachers in selected areas of Navi Mumbai. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 2(1), 137–143.
7. Bharti, R. (2019). Impact of organizational role stress on college teachers of arts and science subjects. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, 6(3), 1135.
8. Baliyan, S. P., Baliyan, P. S., & Mokoena, S. (2018). Occupational stress among teachers in private senior secondary schools in Botswana: Causes and consequences. International Journal of Education, 10(2).
9. Bano, B., & Talib, O. P. (2018). Organizational role stress: The conceptual framework. ResearchGate. Retrieved from https://www.researchgate.net
10. कुमारी, प्रियंका. (2021). उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, 9(45), 11152–11160. Retrieved from http://www.srjis.com
11. सिंह, प्रीति., एवं कुमारी, संतोष. (2020). लिटिल अंडमान की शैक्षणिक संस्थाओं में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर एक अध्ययन. Shodh Samagam, 2(5), 438–442.
12. Pathani, R. S., & Chamyal, D. S. (2019). Comparative study of job satisfaction of teachers in primary schools. Journal of Arts, Humanities and Social Science, 2(6), 86–96.
13. देवी, सुशीला. (2018). प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन. Remarking An Analisation, 3(8), 138–142. Retrieved from http://www.socialresearchfoundation.com
14. Hameed, F., Ahmed-Baig, I., & Cacheiro-González, M. L. (2018). Job satisfaction of teachers from public and private sector universities in Lahore, Pakistan: A comparative study. Economics and Sociology, 11(4), 230–245.